विचार बिन्दु

चापलूसी का ज़हरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझ कर पी न जाएँ। –प्रेमचंद

एआई से आ रहा समाचार संस्थानों में आमूल बदलाव

एआई अर्थात कृत्रिम बुद्धिमता जब जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करने लगी हो तब उसका पत्रकारिता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है और उसके क्या नतीजे हो सकते हैं इस पर पिछले हफ्ते वरिष्ठ पत्रकारों तथा विशेषज्ञों ने जयपुर में चर्चा की। एक मोटी सहमति थी कि एआई से पत्रकारों की कार्यकुशलता में सुधार तो हो रहा है मगर साथ ही नई नैतिक और व्यावहारिक चुनौतियां भी सामने आ रही हैं। वास्तव में एआई समाचार उद्योग को आमूल बदल रहा है। आम आदमी के लिए मशीन बुद्धि की नई प्रौद्योगिकी छोटे से केलकुलेटर से तब शुरू हुई थी जब पहला सॉलिड-स्टेट इलेक्ट्रॉनिक कैलकुलेटर 1960 के दशक के शुरु में बाजार में आया। 1970 के दशक में पॉकेट-साइज़ डिवाइस उपलब्ध हो गए। मशीन से गणना की यह प्रौद्योगिकी ही अब विकास की नित नई छलांगें लगाते हुए एआई के नाम से इतनी विशाल हो चली है कि लोग उसके प्रसार से आशंकित हो रहे हैं। पत्रकारिता में अब कोई खबर, फीचर या समीक्षात्मक लेख लिखने के लिए खुद लिखने की जरूरत नहीं रह गई है। एआई अब वर्डस्मिथ (ऑटोमेटेड इनसाइट्स) और क्विल (नैरेटिव साइंस) जैसे उपकरण से बुनियादी समाचार रिपोर्टें लिख कर दे सकती है, खासकर वित्त, खेल और मौसम जैसे विषयों पर तो बिल्कुल सटीक। एआई डेटा और पूर्व-लिखित टेम्पलेट्स के आधार पर लेख तैयार करती है। इसके समर्थक कहते हैं कि यह सामान्य काम मशीन द्वारा कर लेने से पत्रकारों का जो समय बचेगा उससे वे अधिक गहन रिपोर्टिंग पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर सकेंगे। लेकिन दूसरी तरफ ऐसा कहने वाले भी कम नहीं हैं कि इससे आम पत्रकार आलसी हो जाएंगे जिसका अंततः नुकसान पत्रकारिता को ही होगा। एआई का उपयोग पाठकों के लिए उनकी व्यक्तिगत पसंद के अनुसार सामग्री तैयार करने और पाठकों की व्यक्तिगत रुचियों की खबरें तैयार करने के लिए किया भी जाने लगा है। समाचार संस्थान अपने उत्पाद को पाठकों से जोड़ने के उपायों में सुधार लाने की कोशिश करके अपने पाठकों की संख्या बढ़ाने के जतन कर रहे हैं। यह सभी को स्पष्ट हैं कि एआई एल्गोरिदम का उपयोग समाचार सामग्री को क्यूरेट करने और उसे ग्राहक केंद्रित बनाने के लिए मुख्य रूप से किया जा रहा है। उपयोगकर्ताओं की पढ़ने की आदतों का विश्लेषण करके, एआई प्रासंगिक लेखों की सिफारिश करता है। इससे पाठकों को भी ऐसी खबरें खोजने में मदद मिलती है जो उन्हें अन्यथा नहीं मिल सकती थीं। यहभी स्पष्ट है कि वैयक्तिकरण, उपभोगकर्ताओं की सहभागिता और समाचार प्लेटफ़ॉर्म पर उनके द्वारा बिताए गए समय को एआई के जरिये बढ़ाये जाने की कोशिश की जाती है। तथ्यों की जांच के लिए एआई का उपयोग पत्रकारिता में एक महत्वपूर्ण नया पड़ाव है। 'क्लेमबस्टर' जैसे एआई उपकरण दावों को तुरंत सत्यापित करने और झूठी जानकारी की पहचान करने में पत्रकारों और तथ्य-जांचकर्ताओं को मदद कर सकते हैं। डीपफेक डिटेक्शन के लिए एआई विशाल मात्रा के डेटा का तेज़ी से विश्लेषण कर सकता है और गलत सूचना की पहचान करने में मदद कर सकता है तथा विभिन्न स्त्रोतों से उनकी तुलना कर सकता है। डीपफेक जैसी हेराफेरी वाली सामग्री के बढ़ने के दौर में एआई पत्रकारों को संभावित धोखाधड़ी वाले वीडियो और छवियों की पहचान करने और उन्हें चिह्नित करने में भी मदद करने लगा है।

एआई पत्रकारों को बड़े डेटासेट को प्रोसेस करने और उनका विश्लेषण करने में सक्षम बना रहा है। यह डेटा जर्नलिज्म के रूप में जाना जाता है। एआई-संचालित उपकरण सार्वजनिक रिकॉर्ड, सोशल मीडिया और डेटाबेस के माध्यम से रुझानों, कनेक्शन और छिपे हुए तथ्यों को उजागर कर सकते हैं जिन्हें मानवीय क्षमता से पहचानना मुश्किल नहीं तो बहुत समय और श्रम साध्य हो सकता है। पूर्व के डेटा के आधार पर भविष्य के रुझानों की भविष्यवाणी करने के लिए भी एआई का उपयोग किया जा सकता है, जिससे पत्रकारों को अपनी खबरों में अधिक तथ्य शामिल करने में मदद मिलती है। इन्फोग्राफ़िक्स, चार्ट और यहां तक कि वीडियो संपादन जैसे विज़ुअल तत्वों की मदद से खबरें तैयार करने में एआई की मदद ली जा सकती है। एआई-संचालित डिज़ाइन टूल इमेज एन्हांसमेंट और वीडियो निर्माण जैसी प्रक्रियाओं को स्वचालित कर सकते हैं, जिससे पत्रकार इस मेहनत से बच कर स्टोरीटेलिंग पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट जैसे एआई उपकरणों का उपयोग पाठकों के साथ बातचीत करने, उनके सवालों के जवाब देने या उन्हें प्रासंगिक खबरों तक पहुंचाने के लिए किया जा सकता है। यह समाचार संस्थान को अधिक इंटरैक्टिव बना सकता है। पाठकों की टिप्पणियों या सोशल मीडिया प्रतिक्रियाओं के लहजे और भावना का एआई से विश्लेषण किया जा सकता है, जिससे विशिष्ट मुद्दों पर लोगों की राय समझने और उसके अनुसार सामग्री को आकार देने में समाचार संस्थानों को मदद मिल सकती है। एआई का उपयोग पाठकों के व्यवहार का विश्लेषण करने और यह अनुमान लगाने के लिए भी किया जाने लगा है कि कौन से पाठकों की सबसे अधिक जुड़ने की संभावना है। इससे समाचार संगठनों को अपनी व्यावसायिक रणनीतियों बना सकते हैं। एआई विज्ञापनों के लिए लक्षित समूह खोज लेता है जिससे उत्पादक अपने ग्राहकों तक अधिक प्रासंगिक और वैयक्तिकृत पहुंच बना सकते हैं।

इन्फोग्राफ़िक्स, चार्ट और यहां तक कि वीडियो संपादन जैसे विज़ुअल तत्वों की मदद से खबरें तैयार करने में एआई की मदद ली जा सकती है। एआई-संचालित डिज़ाइन टूल इमेज एन्हांसमेंट और वीडियो निर्माण जैसी प्रक्रियाओं को स्वचालित कर सकते हैं, जिससे पत्रकार इस मेहनत से बच कर स्टोरीटेलिंग पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। एआई विज्ञापनों के लिए लक्षित समूह खोज लेता है जिससे उत्पादक अपने ग्राहकों तक अधिक प्रासंगिक और वैयक्तिकृत पहुंच बना सकते हैं।

लेकिन एआई के उद्भव से पत्रकारिता में नैतिक और संपादकीय चिंताएं जरूर बढ़ गई हैं। इसका कारण एल्गोरिदम का पूर्वाग्रह है। एआई मॉडल केवल उतने ही अच्छे होते हैं जितना और जिस प्रकार उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। पक्षपाती डेटा पक्षपाती रिपोर्टिंग को जन्म दे सकता है। एक बड़ी चिंता पत्रकारिता जगत में रोज़गार खत्म होने के अंदेशे की है। जब एआई कई कामों को कर सकता है तब पत्रकारों की नौकरी की सुरक्षा पर इसके प्रभाव के सवाल भी उठाने उचित ही हैं। कुछ लोगों को डर है कि व्यापक स्वचालन से न्यूज़रूम में नौकरियों में कटौती हो सकती है, खासकर नियमित रिपोर्ट लिखने या कंटेंट क्यूरेशन जैसे कामों के लिए। इसके अलावा अन्य क्षेत्रों की तरह पत्रकारिता में भी मानवीय स्पर्श समाप्त होने लग सकता है। एआई में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानवीय बारीकियां संभव नहीं है इसलिए एक जायज चिंता यह भी है कि इस कमी के कारण सहानुभूतिपूर्ण और संदर्भ-संचालित रिपोर्टिंग को नुकसान पहुंच सकता है। एआई संचालित सामग्री में गहरी समझ और नैतिक विचारों की कमी हो सकती है जो एक मानव पत्रकार अपनी खबर में लाता है। एआई जनित सामग्री के बढ़ने के साथ, उपयोगकर्ताओं के साथ विश्वास बनाए रखना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा। एआई के जरिये गलत सूचनाएं फैलाये जाने और पत्रकारिता की अखंडता को कमजोर करने वाली सामग्री बनाने की उसकी क्षमता के बारे में भी चिंताएं हैं, खासकर तब जब एल्गोरिदम तथ्यात्मक रिपोर्टिंग को सनसनीखेज बनाने को प्राथमिकता देते हों। पत्रकारिता में पारदर्शिता की भी चिंता है। मीडिया संगठनों का लोगों में अपने प्रति विश्वास बनाने और अपने ग्राहकों को गुमराह करने से बचाने के लिए सामग्री निर्माण में एआई के उपयोग के बारे में पारदर्शी होना आवश्यक है। इसलिए जहां एआई पत्रकारों की दक्षता बढ़ाकर, वैयक्तिकरण में सुधार करके और डेटा विश्लेषण में मददगार बनकर पत्रकारिता में नई क्रांति ला रहा है वहीं यह पूर्वाग्रह, नैतिकता और पेशे के भविष्य के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाता है। बड़ा सवालों यह है कि डिजिटल युग में पत्रकारिता के विकास के साथ ही एआई के लाभों को मानवीय अंतर्दृष्टि और नैतिक मानकों की आवश्यकता के साथ कैसे संतुलित किया जाएगा।

समाचार उद्योग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग पर भारतीय पत्रकारों का दृष्टिकोण सतर्क-आशावाद का है। माना जा रहा है कि एआई छोटे और मध्यम आकार के समाचार संगठनों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है जिनके पास लेखकों और संपादकों की बड़ी टीम नहीं है। पत्रकार खबरों की खोज और शोध के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं। यह जान कर पत्रकार जगत को सांत्वना मिल सकती है कि एआई के उपकरण आलोचनात्मक सोच और तथ्य-जांच में मानव पत्रकारों के कौशल की जगह नहीं ले सकते। किन्तु कुछ लोगों की यह चिंता वाज़िब है कि एआई पर बहुत अधिक निर्भर रहने से समाचार-संकलन प्रक्रिया में मानवीय दृष्टिकोण और रचनात्मकता को नुकसान हो सकता है। श्रमजीवी पत्रकार संगठनों की यह चिंता भी उचित है कि एआई से उद्योग में कुछ श्रेणियों की नौकरियां जा सकती है, क्योंकि मशीनें मनुष्यों की तुलना में कुछ कार्य अधिक तेज़ी से और किफ़ायती तरीके से कर सकती हैं। मगर मशीन जनित सामग्री पक्षपाती या भ्रामक हो सकती है, और गलत सूचनाओं के प्रसार में योगदान दे सकती है, इस बारे में सतर्क रहने की जरूरत है। एआई के उपयोग में पारदर्शिता लाकर विभिन्न चिंताओं से निबटा जा सकता है। क्योंकि समाचार व्यवसाय में पारदर्शिता की पहले से ही कमी है इसलिए एआई आधारित व्यवस्था में नई प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे किया जाता और इसके उपयोग के संभावित परिणामों की चिंता और बढ़ जाती है। कुल मिलाकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का पत्रकारिता पर प्रभाव निश्चित रूप से गहरा और बहुआयामी है। जहां यह पत्रकारिता की प्रक्रिया को तेज, अधिक कुशल और प्रभावी बना रहा है, वहीं यह नई चुनौतियां भी पेश कर रहा है। एआई पत्रकारों के लिए एक सहायक उपकरण बनकर उभरा है, लेकिन इसके प्रभाव को पूरी तरह से समझने और इसे सही दिशा में उपयोग करने के लिए मीडिया संस्थानों को सतर्क रहना होगा। यदि इसका सही तरीके से उपयोग किया जाता है, तो यह पत्रकारिता की गुणवत्ता और सूचना की सटीकता में सुधार कर सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

भक्ति, सत्य, एकता व सद्भाव की निरंकुश आततायी और असहिष्णु राज्य शक्ति पर जीत का पर्व होली

डॉ. जे. के. गर्ग

हमारे मुल्क के अंदर पर्व मनाने के पीछे तर्क यही है कि जिंदगी को एक उत्सव के रूप में जिया जाये, जीवन का हर पल सुखमय और आनंदमय हो। प्रतेयक पर्वों का धार्मिक सामजिक और वैज्ञानिक महत्व होता है। होली के पर्व का सामाजिक पहलू भी है क्योंकि होली का पर्व परिवार, आस-पडोस, समाज, विभिन्न समुदाय और विभिन्न वर्ग के लोगो को स्नेह-सोहार्द सद्भाव और भाईचारे के अटूट बंधन में बांधता है और उनके बीच में पनपे अविश्वास, शंका, विवादों को मिटाकर पारस्परिक रिश्तों को फेवीकोल के जोड़ जैसा मजबूत बनाता है। होली का पर्व आपसी संबंधों को पुनः जीवित करने और मजबूती के टॉनिक के रूप में भी कार्य करता है।

असुर सम्राट हिरण्यकश्यप की बहन होलिका कोई साधारण स्त्री नहीं थी किन्तु वह तो मायावी असुर थी जो ईर्ष्या, राग-द्वेष, अनाचार तथा समस्त दुष्कर्मों की प्रतीमुर्ती एवं घोर नास्तिक थी। दस्युराज हिरण्यकश्यप की अपार शक्ति के आगे नन्हे-मासूम प्रहलाद की क्या बिसात थी? नन्हे-मासूम प्रहलाद के पास भक्ति सत्य निष्ठा प्रभु के चरणों में सम्पूर्ण समर्पण की शक्ति थी। अंत में जीत तो भक्ति, विश्वास एवं सत्य की ही हुई। याद रक्खे सत्य ही परमात्मा है। भगवान कृष्ण ने बताया कि स्त्री पुरुष को निष्काम भाव से सात्विक करते हुए उन्हें प्रभु के श्री चरणों में समर्पित कर देना चाहिए इसी वजह से आदि काल से सनातन धर्म में सात्विक, राजसी और तामसी तामसी प्रवृत्तियों को त्यागने को कहा गया में से सुखी जीवन के लिये सात्विक प्रवृत्ति को ही श्रेष्ट माना गया है, राजसी प्रवृत्ति को भी त्याग ने को कहा गया है। होलिका दहन का का वास्तविकता में मतलब है जीवन के रोम रोम में से समस्त दुष्कर्मों और तामसी आदतों का जड़ से समूल नाश और दहन। आप की मजबूत इच्छाशक्ति आपको सारी बुराइयों से बचा सकती है। तामसी प्रवत्ति होली की दिव्य अग्नि में भस्म कर देना ही सच्चा 'होलिका दहन' है। भारत में होली का त्योहार यों तो वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है।

उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे,पशु-पक्षी एवं सभी नर-नारी उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का ह्रदय ख़ुशी से नाच उठता है। होली का पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन तक मनाया जाता है। इस वर्ष होलिका दहन 25 मार्च 2024 को धूमधाम से मनाया जाएगा।

इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों में भी होली पर्व का प्रचलन था। वैदिक काल में इस पर्व को नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता था। विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से 300 वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी इसका उल्लेख किया गया है। सुप्रसिद्ध मुस्लिम पर्यटक अलबरूनी ने भी अपनी ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होलिकोत्सव का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि होली को केवल हिंदू ही नहीं वरन मुसलमान भी हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। सबसे प्रामाणिक इतिहास की तस्वीरें हैं मुगलकाल की हैं, इसी काल में अकबर का जोधाबाई के साथ तथा जहाँगीर का नूरजहाँ के साथ होली खेलने का वर्णन भी मिलता है। अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र के बारे में प्रसिद्ध है कि होली पर उनके मंत्री उन्हें रंग लगाने जाया करते थे। उन दिनों में होली का पर्व धार्मिक सौहार्द और पारस्परिक भाई चारे के पर्व के रूप में मनाया जाता था।

होली दहन के दूसरे दिन को धुरड्डी, धुलेंडी, धुरखेल या धूलिवंदन कहा जाता है, इस दिन बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष अपने मनमुटाव मतभेद को भुला कर निसंकोच ढोलक, मंजीरे के साथ नाचते-गाते हुए टोलियां बना कर आसपास के घरों और दोस्तों तथा रिश्तेदारों के घर पर जाकर उन्हें रंग गुलाल लगाते हैं पुरानी कटुता एवं दुश्मनी को भूल कर आपस में प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं और दुश्मनी को छोड़ कर घनिष्ट दोस्त बन जाते हैं। रंग खेलने के बाद के दोपहर में स्त्री-पुरुष बच्चे-बुजुर्ग स्नान करते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर अपने स्वजनों, ईष्ट मित्रों, पास-पड़ोसियों से मिलने उनके घर पर जाते हैं। आजकल किसी सार्वजनिक जगह पर भी होली मिल्न का सामूहिक आयोजन किया जाता है हैं। स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ प्रीति भोज में शामिल होकर मौज-मस्ती करते हुए गाने बजाने का प्रोग्राम भी करते हैं ।

फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण होली को फाल्गुनी भी कहते हैं। अन्न को होला भी कहते हैं, इसलिए इस पर्व का नाम से इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा। होली के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है। अतः यह पर्व नवसंवत के आरंभ का प्रतीक भी है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादि तिथि भी कहते हैं।

होलिका दहन का वैज्ञानिक महत्व भी अनूठा है क्योंकि होलिका दहन के समय उत्पन्न गर्म वातावरण हमारे लिये सुरक्षा कवच का काम भी करता है। सर्दी के मौसम में कई तरह के वायरस और बैक्टीरिया वातावरण में रहते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिये हानि कारक होते हैं। पूरे देश में विभिन्न स्थानों पर होलिका दहन की प्रक्रिया से वातावरण का तापमान 145 डिग्री फारेनहाइट या इससे अधिक तक बढ़ जाता है जो बैक्टीरिया और अन्य हानिकारक कीटों को नष्ट करने में प्रभावी भूमिका निभाता है। होलिका दहन के वक्त सभी नर-नारी घेरा बना कर जलती हुई होली को देखते हैं। होलिका दहन के बाद लोग वहां की राख, जिसे विभूति कहते हैं, को चंदन और आम के पत्तों के साथ मिला कर अपने मस्तिष्क पर लगा कर उसका लेप करते हैं। कुछ स्थानों पर जलती हुई राख और अंगारों को छलनी में डाल कर अपने घर ले जाकर उसमें नई गेहूं की बालियों को पकाते और पापड़ खीचें भी सकते है। होली के जलते हुए कोयलों पर गेहूँ की बालियों को भुन कर नई फसल के लिये परमात्मा को धन्यवाद देते हुये पापड़ खीचें भी भुन कर खाते हैं। नई फसल के आ जाने से किसानों सहित जनमानस के चेहरे पर खुशी और उल्लास जगमगा उठती है।

निःसंदेह होली का मतलब हो ली यानी जो हो गया सो हो गया अथवा जो बीत गया सो बीत गया। संत कबीर ने सही कहा था–बीती ताई बिसार दे और आगे की सुध लें अर्थात जो बीत गया उसकी चिंता न करें तथा आगे के लिए जो भी काम करे वो सही करें। घृणा की जगह प्रेम करें, दूसरों का सम्मान करें और उनकी बात सुनें। इंग्लिश के शब्द का हिन्दी में मतलब होता है–पवित्र यानि हमारे सारे काम स्वार्थ की जगह समाज, परिवार और देश हित हो।

सही मायने में होली अन्याय पर न्याय की, कटुता पर मधुरता, नकारात्मकता पर सकारात्मकता, झूठ-फरेब पर सच्चाई, स्नेह, सौहार्द एवं सद्भावना की जीत का पर्व है। इस होली पर हम संकल्प लें कि हम हमारे परिवार,समाज और देश में सभी तरह के भेदभाव और बुराइयों को जला देगें। होली या रंग महोत्सव को स्नेह-प्यार-मोहब्बत का त्यौहार बनाएंगे। तामसी प्रवृत्ति यानी ईर्ष्या, अनाचार, दुर्भावना क्रोध हिंसा अभिमान असहिष्णुता, अविश्वास रूपी होलिका को होली की दिव्य अग्नि में भस्म कर देना ही सच्चा 'होलिका दहन' है। रंगोत्सव यानि होली खेलने की सार्थकता तभी होगी जब हम परमात्मा में श्रद्धा रखते हुए सात्विक विचार, सकारात्मकता, स्नेह, प्रेम, सौहार्द, सहिष्णुता, सहृदयता और करुणा दया के रंग में अपनी अंतरात्मा को आत्मसात कर देगें।

हम सभी जानते हैं कि हमारे आराध्य देव शिवजी के परिवार में बिच्छू, बैल और सिंह, मयूर एवं सर्प बैल और चूहा जैसे घोर विरोधी स्वभाव के प्राणी भी प्रेमपूर्वक साथ साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो क्यों नहीं हम हमारे समाज एवं देश में बिना किसी भेदभाव के गिरे हुओं को, पिछड़े हुओं को, विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को साथ लेकर चल सकते हैं? जब मुगल काल के अंदर हिंदू-मुसलमान मिलकर होली बनाते थे तो आज क्यों नहीं? विभिन्न धर्मालंबी होली को परस्पर स्नेह-प्रेम और भाईचारे के पर्व के रूप में मिलजुल कर बना सकते हैं। क्यों हम श्मशान कब्रिस्तान मंदिर मस्जिद के व्यर्थ विवादों में उलझे रहतें है ? क्यों हम हिजाब या भगवा के विवाद खड़े करते हैं ? राष्ट्र की प्रगति के लिये हम सभी मिलके क्यों नहीं काम करते हैं? अब तय आपको ही करना है कि इस होली पर भी आप विगत वर्षों की होली के भाति सिर्फ घास फूस जलाने ही जा रहे हैं या फिर अपनी बुराइयों राग द्वेष, मनमुटाव को सच्चे दिल से जलाने और भस्म करने का मजबूत संकल्प लेंगे।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

खेल संकुल में कबड्डी अकादमी के छात्रों को दूषित पानी पीना पड़ रहा है

गंदगी और कीटाणु युक्त पानी पीने से छात्रों में बीमारी फैलने का भय बना हुआ है

करौली, (निसं.)। जिला मुख्यालय स्थित खेल संकुल में कबड्डी अकादमी के छात्रों को गंदगी और कीटाणु युक्त पेयजल पीना पड़ रहा है। इससे छात्रों में बीमारी फैलने का भय बना हुआ है।

करौली जिला मुख्यालय स्थित खेल संकुल में कबड्डी अकादमी के 22 छात्र हैं जो कबड्डी खेल की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन विभागीय अधिकारी उन छात्रों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं जिनको पीने का पानी स्वच्छ नहीं मिल पा रहा है। अकादमी में पेयजल के लिए लगा वाटर कूलर पिछले लंबे समय से सफाई नहीं होने के कारण वाटर कूलर में गंदगी के साथ बीमारी फैलाने वाले कीट जमा होने से छात्रों के बीमारी फैलने की संभावना को देखते हुए छात्रों ने वाटर कूलर से पेयजल पीना बंद कर दिया, मगर विभाग के अधिकारी-कर्मचारी वाटर कूलर में जमा गंदगी की सफाई नहीं करा रहे हैं। वाटर कूलर में जमा काई और गंदगी के अलावा बीमारी फैलाने वाले कीट नजर आते है। यही नहीं अकादमी में छात्रों की शौचालय सुविधा के लिए बने शौचालय की दशा सफाई के नाम पर बदतर देखी गई। शौचालय कि सफाई के बारे में अकादमी के छात्रों से जानकारी लेनी चाही गई मगर छात्रों में अकादमी से निकालने का भय व्याप्त होने के कारण मुंह खोलने को तैयार नहीं हुए। छात्रों ने अपना नाम, पता एवं फोटो खिंचवाने की मना करने की शर्त पर अकादमी में मूलभूत सुविधाओं के नहीं मिलने की खुलकर बात कही।

वाटर कूलर में गंदगी फैली हुई है।

- **वाटर कूलर में गंदगी के साथ बीमारी फैलाने वाले कीट जमा होने से छात्रों ने वाटर कूलर से पेयजल पीना बंद किया**

छात्रों ने बताया कि वाटर कूलर और एकेडमी भवन के ऊपर रखी पानी की टंकी की सफाई पिछले लंबे समय से नहीं होने के कारण उसमें कीटाणु पनप रहे हैं। इसके अलावा छात्रों के भवन की खिड़कियों के कांच टूटे होने से बाहरी हवा की मार झेलनी पड़ रही है। पूरी सर्दियों में खिड़कियों से ठंडी हवा आने से सर्दी की मार झेलनी पड़ी और अब आगे गर्मी का मौसम आने वाला है, यदि शीघ्र खिड़कियों में कांच नहीं लगवाए तो गर्म हवाओं की मार भी झेलनी पड़ेगी।

हरित संगम मेला संपन्न, विजेताओं को पुरस्कृत किया

नागौर, (निसं)। अपना संस्थान व नगर परिषद नागौर के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय हरित संगम मेला 2025 संपन्न हुआ। संत जानकीदास महाराज के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में जिला कलक्टर अरुण कुमार पुरोहित का मुख्य अतिथि में उद्बोधन प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में पद्मश्री हिम्मता राम भांभू, पर्यावरण गतिविधि के राजस्थान क्षेत्र संयोजक विनोद मेलाना विशिष्ट अतिथि के रुप में विराजमान रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जोधपुर प्रांत प्रचारक विजयानंद का इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रान्त प्रचारक ने कहा कि शहरों में जो कचरे का उत्सर्जन हो रहा है। उससे कचरे के बड़े-बड़े पहाड़ पर बन रहे हैं। समाज जीवन में हम ही पर्यावरण का संरक्षण करने वाले हैं और उनका संरक्षण करने वाले हैं। इसलिए हमारा प्रयास कम से कम पर्यावरण दूषण का रहे।

क्षेत्र पर्यावरण प्रभारी ने अपने-अपने संबोधन में कहा कि इस वर्ष महाकुंभ में चलाए गए एक थैली, एक थेला अभियान से कचरे के भार में पर्याप्त कमी आई है। समाज जीवन में छोटे-छोटे स्थानों पर समाज के अन्य बंधुओं द्वारा पर्यावरण क्षेत्र में उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। नागौर में पद्मश्री हिम्मताराम व सुखराम चौधरी के उदाहरण हम हमारे व्यक्तिगत जीवन में प्रेरणा देते हैं। कार्यक्रम में संत जानकीदास महाराज व पद्म श्री हिम्मताराम भांभू ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मेले के समापन दिवस पर आयोजित परंपरागत सतोलिया प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में खेल केंद्र गोगेलाव प्रथम व नागौर खेल केंद्र द्वितीय स्थान पर रहा जबकि महिला वर्ग में गोगेलाव खेल केंद्र ने खेल संकुल नागौर पर विजय प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। बालकों की तीन टांग प्रतियोगिता में बालक वर्ग में यश जांदू व देवांग की जोड़ी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया वहीं पवन व विशृत की जोड़ी द्वितीय विजेता बनी। बालिका वर्ग में माया जांगू व युविका प्रथम विजेता बनी जबकि लक्षिता व कनिष्का की जोड़ी ने द्वितीय विजेता का स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर नागौर के पूर्व विधायक मोहन राम चौधरी, विभाग संघ चालक हनुमान सिंह देवड़ा, जिला संघ चालक मुकेश भाटी, विभाग प्रचारक गिरधारी लाल, सह विभाग कार्यवाह संजय सोनी, भूराराम चौधरी, माणक चौधरी, राम रतन बिश्नोई, जिला खेल अधिकारी सोहन राम गोदारा, श्रवण सोनी, आनंद पुरोहित, मनीष शर्मा, भोजराज सारस्वत, दिलीप शर्मा, हरिराम धारणिया, पार्षद नवरत्न बोथरा, शिव कुमार राव सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

राशिफल बुधवार 12 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, मघा नक्षत्र रात्रि 4:06 तक, सुकर्मा योग दिन 1:00 तक, तैतिल करण प्रातः 9:12 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सूर्योदय रात्रि 4:06 तक है। आज माघी मासम है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:40 तक, शुभ 11:08 से 12:37 तक, चर 3:33 से 5:02 तक, लाभ 5:02 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:44, सूर्यास्त 6:30

मेष
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

सिंह
मनःस्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति एवं आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।